International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 20-07-2021, Accepted: 05-08-2021, Published: 20-08-2021
Volume 3, Issue 3, 2021, Page No. 19-21

निराला का आत्मसंघर्ष और राम की शक्ति पूजा

आरती मीणा[1], श्योराज सिंह 'बेचैन'[2]
[1] पी. एच. डी शोधार्थी, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत
[2] विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
निराला (1896ई.–1961ई.) छायावाद (1918ई.–1936ई.) के प्रतिनिधि कवि हैं। छायावादी कविता राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति थी तथा द्विवेदी युगीन साहित्यिक परिस्थितियों के विरूद्ध विद्रोह की उपज थी। विद्रोह का यह भाव निराला में सर्वाधिक था। निराला ने छायावाद को नवजागरण का संदेशवाहक माना था। निराला के काव्य में वस्तुगत छायावादी प्रवृत्तियां– आत्मभिव्यक्त रूढियों से मुक्ति, रहस्यवाद, प्रकृति प्रेम, नारी स्वातंत्र्य की भावना, राष्ट्रीयता की भावना विद्यमान है।
निराला के काव्य में छायावादी शिल्पगत प्रवृत्तियों में कल्पनाशील चित्रात्मकता, नाद सौंदर्य, संगीतात्मकता, लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता आदि देखने को मिलती है। छायावादी शिल्प की दृष्टि से ही नहीं आधुनिक कविता के विकास में भी मुक्त छंद निराला की अमूल्य देन है। यह उनकी छंद संबंधी प्रयोगशीलता का सर्वोच्च स्तर है। निराला लिखते हैं ''मुक्त छंद तो वह है, जो छंद की भूमि में भी रहकर मुक्त है..... मुक्त छंद का सर्मथक उसका प्रवाह ही है। वही उसे छंद सिद्ध करता है उसका नियम राहित्य उसकी मुक्ति है। निराला छंद मुक्ति व मानव मुक्ति में गहरा संबंध देखते है। 'परिमल' की भूमिका में वे लिखते हैं, ''मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है मनुष्यों की मुक्ति कार्यों के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के अनुशासन से अलग हो जाना है।'' मुक्त छंद स्वाधीन चेतना और स्वछंद भाव की देन हैं, निराला में ये दोनों प्रवृत्तियां स्पष्टतः दिखाई देती है।

मुख्य शब्दः राम की शक्ति पूजा, छायावादी कविता, निराला, रहस्यवाद, प्रकृति प्रेम, नारी स्वातंत्र्य की भावना, राष्ट्रीयता की भावना।

प्रस्तावना
राष्ट्रीय जागरण का स्वर निराला की रचनाओं में आरंभ से ही विद्यमान है। देश की गुलामी और उससे मुक्ति उनकी मूल चिंता है निराला के काव्य में जागरण के विविध पक्ष समाहित हैं। उनके काव्य में साम्राज्यवाद और सामंतवाद विरोधी स्वर सुनाई पड़ता है। उनमें भारतीय परंपरा और संस्कृति के प्रति गहरा गौरव बोध है। रूढियों से मुक्त होने की प्रबल आकांक्षा निराला के काव्य की मूल विशेषता है। निराला ने दलित और स्त्री जागरण का भी प्रभावी संदेश दिया है। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानंद का सर्वाधिक प्रभाव निराला की कविताओं में विद्यमान है।
निराला की शुरूआती रचनाओं की काव्यभाषा में संस्कृत पदावली के साथ सामासिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे– 'जूही की कली', 'तुम और मैं'। राम की शक्ति पूजा और तुलसीदास जैसी लंबी कविताओं में भी संस्कृत पदावली के साथ सामासिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। निराला ने बाद की कविताओं में मुक्त काव्य लिखने का प्रयास किया है। इन कविताओं की भाषा सामासिक पदावली से हटकर सहज देशज रूप में दिखाई देती है।
काव्य का शिल्प समयानुसार परिवर्तित होता है, या कहें कि परिवर्तन की मांग करता है। शिल्पगत परिवर्तन ही साहित्य को जीवित रखता है। आज परिवर्तन की गति बहुत तेज है। यह परिवर्तन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तेजी से हो रहा है। विचारों के स्तर पर भी परिवर्तन की गति तीव्र है।
बदलती भावभूमि के अनुसार कविता ने अपना रूपाकार बदल दिया। परम्परा से चली आ रही प्रचलित काव्य विधाओं से अलग विधा का जन्म 'लम्बी कविता' के रूप में हुआ है। जिसके कारण कविता के इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत हो गयी है।
डॉ. नरेन्द्र मोहन के अनुसार लम्बी कविता उसे कहेंगे– ''जिसमें नए जीवन विधान की संगति हो, और जो परम्परागत रूप विधान की रूढियों से मुक्त भी हो, जिसमें नए सत्य के साक्षात्कार की क्षमता हो, और जो आधुनिक परिस्थिति और संवेदना द्वारा पुष्ट और प्रमाणित भी हो''। इनकी दृष्टि में लम्बी कविता आज काव्यगत अनिवार्यता बन चुकी है। डॉ. रामदरश मिश्र ने लम्बी कविता के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा है कि, ''लम्बी कविता वह है, जो आज के जीवन के कई–कई घुमावदार मोडों से गुजरती हुई जटिल यथार्थ का बोध और अनुभूति को उभारती है।''
लम्बी कविता की व्यापकता को स्पष्ट करते हुए डॉ. शिवकुमार शर्मा लिखते हैं कि, ''लम्बी कविता में अन्तर्द्वन्द्व या कवि मानस का अन्तःसंघर्ष पूरी भाव प्रवणता के साथ मुखरित होता है। कवि का यह आत्मसंघर्ष व्यक्तिपरक एवं समष्टिपरक दोनों रूपों में संभव है। कभी–कभी यह अन्तःसंघर्ष वृत्तात्मकता परक भी हो सकता है। इस अन्तःसंघर्ष में जीवन की द्वनद्वात्मकता, उसके सुख–दुःख, प्रकाश–अन्धकार, आशा–निराशा आदि उभय पक्षों का निरूपण एक अनिवार्य उपबंध है।''
लम्बी कविता की लम्बाई में कोई आदि या अन्त नहीं होता। इसका कारण यह है कि, लम्बी कविता वर्तमान को उसकी समग्रता में चित्रित करना चाहती है।
लम्बी कविता सामाजिक यथार्थ और बदलते जीवनानुभवों के नए–नए पहलुओं को खोलती हुई एक विशिष्ट संवेदनात्मक एवं वैचारिक व्यक्तित्व अर्जित करती चलती है। लम्बी कविताएं विशाल रूप में चुनौती देने लगती हैं। यह चुनौती अपने आकार में, अपने ढांचे में, अपनी संरचना में, अपने तेवर में, और सबसे ज्यादा व्यापक और गहरे आशयों को ध्वनित करने वाले अपने कथ्य में, संवेदना और विचार को, स्मृति और

इतिहास को तानने की अपनी क्षमता में। परिणाम स्वरूप लम्बी कविताएं एक जरूरी काव्य माध्यम के रूप में हिन्दी साहित्य के मंच पर सामने आयी।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'राम की शक्ति पूजा' महाकाव्यात्मक औदात्य से सम्पन्न लम्बी कविता है। इस कविता में नाटकीयता भी विद्यमान है, जो लम्बी कविता का प्रमुख तत्व है। कवि ने इस कविता के माध्यम से शक्ति की मौलिक कल्पना प्रस्तुत की है। शक्ति की मौलिक कल्पना से यहाँ तात्पर्य है कि शक्ति मूलतः साधना के वशीभूत है, नैतिकता के नहीं।

राम की शक्ति पूजा 1936ई. की रचना है और संश्लिष्ट अर्थ– विधान में एक सूत्र राष्ट्रीय आंदोलन से भी जुड़ता है। कालजयी कविता की यही पहचान होती है कि वह अपने समय के संदर्भो से सीमित नहीं होती बल्कि उन्हें कालमुक्त कर देती है। शक्ति पूजा में राष्ट्रीय चेतना इसी स्तर पर उपस्थित है।

निराला गार्हस्थिक प्रेम के कवि हैं। उनके सम्पूर्ण साहित्य में गार्हस्थिक प्रेम की प्रतिबद्धता के कई उदाहरण मिलते है, जैसे पंचवटी प्रसंग, तुलसीदास तथा सरोज स्मृति के कुछ अंश। शक्ति पूजा की मूल संवेदना इसी कड़ी का अगला चरण है। वे सरोज स्मृति में पुत्री की मुक्ति करते हैं। राम की शक्ति पूजा में पत्नी की मुक्ति उनकी नारीमुक्ति चेतना का सर्वोच्च चरण है।

राम की शक्ति पूजा आख्यानपरक ढाँचे में लिखी गई कविता है, इसीलिए उसके कथ्य का निरूपण जटिल हो गया है। छायावादी कवि की कविता में वैयक्तिकता का होना स्वाभाविक है। छायावाद के चारों कवियों में देखें तो निजता के संप्रेषण की विशेषता निराला में सबसे अधिक दिखाई देती है। उन्होने राम की शक्ति पूजा से तुरंत पहले 'सरोज स्मृति' लिखी थी जिसमें वैयक्तिकता सीधे–सीधे मैं शैली में दिखाई देती है। सरोजस्मृति से तुलना करने पर साफ दिखता है कि राम की शक्ति पूजा में भी उनका अपना व्यक्तित्व प्रक्षेपित हुआ है। सरोज स्मृति में जो समस्याएं है, उन्हीं का अगला चरण राम की शक्तिपूजा में दिखाई देता है। इसीलिए दूधनाथ सिंह जैसे समीक्षकों का मानना है कि निराला का अपना जीवन व उनके आत्मसंघर्ष ही इस कविता में प्रतीकात्मक पद्धति से व्यक्त हुए हैं।

कविता की शुरूआत रवि हुआ 'अस्त' अर्थात् अंधेरे की स्थिति से हुई है। यह अंधेरा एक स्तर पर निराला के जीवन का अंधेरा ही है। यह निराशा वही है जो सरोज स्मृति के अंतिम हिस्से में दिखाई देती है– ''दुःख ही जीवन की कथा रही/ क्या कहूँ जो नहीं कही।''

जीवन के संघर्षो से जर्जर जैसा व्यक्तित्व सरोज स्मृति में निराला का था, वैसा ही राम की शक्ति पूजा में राम का है। संघर्ष से जर्जर राम व निराला एक जैसे हैं–

राम की शक्ति पूजा–

''पश्चात् देखने लगी मुझे, बँध गये हस्त,
फिर खिंचा न धनु, मुक्त ज्यों बँधा मैं, हुआ, त्रस्त!''
सरोज स्मृति–

''आते थे मुझ पर तुले तूर्ण।
देखता रहा मैं खडा अपल,
वह शर–क्षेप वह रण कौशल।''

राम की शक्तिपूजा के राम में सीता के प्रति जो गहरा एवं एकनिष्ठ प्रेम दिखाई देता है, वह भी निराला के एकनिष्ठ गार्हस्थिक प्रेम का ही प्रक्षेपण है। मनोहरा देवी के प्रति निराला के प्रेम की एकनिष्ठता का ही परिणाम था कि वे अपनी जन्म कुंडली में लिखे दो विवाहों की घोषणा को भी दृढ संकल्प से खंडित करते है। यही एकनिष्ठता राम में भी है जो सीता की मुक्ति का आधार रही है

राम की शक्ति पूजा–

''जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।''
सरोज समृति–

''खंडित करने को भाग्य अंक, देखा भविष्य के प्रति अशंक।
''गाया स्वर्गीया प्रिया संग, भरता प्राणों में राग–रंग।''

राम की शक्ति पूजा की बड़ी समस्या यह है कि अन्याय जिधर है, शक्ति उसी तरफ है। शक्ति का अन्याय के पक्ष में होना निराला के जीवन की समस्या भी है। राम की शक्ति पूजा में रावण समस्त वैभव से सम्पन्न है, जबकि राम वनवास में होने के कारण सुविधाओं से वंचित हैं। साथ ही, महाशक्ति भी अन्यायी रावण के साथ है। निराला के व्यक्तिगत परिवेश में भी शक्ति अन्याय के पक्ष में है। यह अन्याय मुख्यतः आर्थिक क्षेत्र में है और यही निराला के जीवन का मूलभूत संघर्ष है–

राम की शक्ति पूजा–

''अन्याय जिधर है, उधर शक्ति!''
सरोज स्मृति–

''लख कर अनर्थ आर्थिक पथ पर,
हारता रहा मैं स्वार्थ समर''

इन आर्थिक संघर्षो के साथ निराला साहित्यिक जीवन में भी अन्याय के शिकार है। सरोज स्मृति में वे लिखते हैं–

''लौटी रचना लेकर उदास
ताकता हुआ मैं दिशाकाश,
बैठा प्रान्तर में दीर्घ प्रहर,
व्यतीत करता था गुन–गुन कर,
संपादक के गुण, यथाभ्यास
पास की नोंचता हुआ घास।''

सरोज स्मृति में निराला जीवन के संघर्षो से नही जीत पाए थे, इसलिए उनमें पहली बार निराशा व पराजय का स्वर दिखता है। राम की शक्ति पूजा में निराला राम बनकर पुनः विजयी हुए हैं और इस रूप में यह कविता राम की विजय यात्रा के साथ–साथ निराला की भी विजय यात्रा है। इस रूप में 'पुरूषोत्तम नवीन' स्वयं निराला है जो नई शक्ति व नए ओज से युक्त है। निम्नलिखित पंक्तियों में मानो निराला स्वयं को ही प्रेरणा दे रहे हैं –

''आराधन का दृढ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर,
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर रहा त्रस्त,
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त।''

शक्ति पूजा के राम शक्ति की साधना योग प्रक्रिया के माध्यम से कर रहे हैं। चूँकि निराला स्वयं योग मार्ग से जुडे हुए थे, इससे संकेत मिलता है कि उन्होंने अपने ही व्यक्तित्व का आरोपण राम पर किया है–

''क्रम क्रम से हुए पार राघव के पंच दिवस,
चक्र से चक्र मन चढता गया उर्ध्व निरलस।''
निराला के राम या स्वंय निराला चीत्कार कर उठते हैं –

''धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,

धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध!''
(राम की शक्ति पूजा)

''हो इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म रहे नत सदा साथ,
इस पथ पर मेरे कार्य सकल
हो भ्रष्ट शीत के से शतदल।'' –(सरोज स्मृति)

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि निराला का मन सरोज स्मृति में थक गया था, किंतु यह थकने वाला मन उनका असली मन नहीं था। निराला अपने राम की ही तरह कभी न हारने वाले पुरूषार्थी थे और यही कारण है कि राम की शक्ति पूजा के राम सीता मुक्ति के अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए कभी न थकने हारने वाली मनः स्थिति में पहुंच जाते हैं–

''वह एक और मन रहा राम का जो न थका,
जो नही जानता दैन्य, नही जानता विनय।''

शक्ति पूजा के राम निराला को ही अभिव्यक्त करते हैं, इसका एक प्रमाण दूधनाथ सिंह के अनुसार यह भी है कि इस कविता में राम की शारीरिक संरचना व सौन्दर्य वैसा ही बताया गया है जैसा स्वयं निराला का है। निराला शारीरिक दृष्टि से विशालकाय थे। उनकी लम्बी जटाएँ व सम्पूर्ण देह यष्टि ही मानो राम के इस वर्णन में साकार हो उठी हैं–

''दृढ जटा–मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल,
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वृक्ष पर, विपुल
उत्तरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशानधकार,
चमकती दूर ताराएं ज्यों हो कहीं पार।''

दूधनाथ सिंह का कहना है कि जिन्होंने निराला को सरोज की मृत्यु के बाद टूटन की स्थिति में देखा है, वे इस कविता को पढ़कर अवश्य महसूस कर सकते हैं कि इसके राम स्वयं निराला ही हैं।

निष्कर्ष

जिस तरह निराला हमेशा संघर्षों से जूझते रहे, वैसे ही राम भी। अनुष्ठान की पूर्णता के नजदीक देवी दुर्गा का अंतिम फूल उठा के ले जाना ऐसे ही अंतिम संघर्ष का परिचायक है। निराला के जीवन में मनोहरा देवी का साथ छूट जाना, फिर आर्थिक अभावों के कारण सरोज का चले जाना और महान रचनात्मकता के बावजूद साहित्य क्षेत्र में स्वीकृति न मिलना– ये सभी संघर्ष मिलकर निराला को उस भाव–भूमि पर ले जाते हैं जहां कोई भी व्यक्ति आत्मधिक्कार की अवस्था में आ जाता है।

संदर्भ

1. नगेन्द्र–राम की शक्तिपूजाः एक कालजयी कृति, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, 1987
2. रामविलास शर्मा–निराला की साहित्य साधना (भाग–1), राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली–110002
3. नन्दकिशोर नवल–राम की शक्तिपूजाः पुनर्विचार, अनुपम प्रकाशन, पटना–800004
4. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'–राम की शक्तिपूजा, आई. एस. बी. एन. 9781–61301–4561